प्रधान मंत्री (श्री अटल बिहारी वाजपेयी): अध्यक्ष महोदय, सत्र का अवसान हो रहा है। परिपाटी है कि अवसान के अवसर पर हम भविष्य के लिए आशायें प्रकट करते हैं और सत्र के दौरान जो उपलब्धियां होती हैं, आपके नेतृत्व में उनका गुणगान भी करते हैं। यह एक परिपाटी हो गई है। लेकिन यह परिपाटी मात्र कर्मकाण्ड बनकर न रह जाए, इसलिए जरूरी तौर से इस बात पर विचार होना चाहिए कि जो सत्र बड़े अच्छे वातावरण में आरम्भ होता है और जिसका सत्रावसान भी गम्भीरता के क्षणों में होता है, वह सत्र निरन्तर ठीक क्यों नहीं चल पाता, संसद की कार्यवाही मे समन्वय क्यों नहीं रह पाता।

संसद चर्चा का स्थान है। फैसले बहुमत से होते हैं, लेकिन अगर संसद को चलने से रोका जाए, तो फिर लोकतंत्र पर आघात होता है। तहलका काण्ड एक गम्भीर काण्ड है। हमने उसे बहुत गम्भीरता से लिया है।

वह सारे सदन के लिए और सभी दलों के लिए एक चेतावनी है, चुनौती है। उस पर चर्चा हो, यह हमारी इच्छा थी। हम चर्चा का वातावरण बनाने के लिए भी तैयार थे, लेकिन मेरी मुश्किल यह हो गई है कि आपको बीच में डालना पड़ा, क्योंकि मेरा त्यागपत्र मांगा जा रहा था। मैं 40 साल से पार्लियामेंट का सदस्य हूं। मुझे ऐसे अपशब्द कभी नहीं सुनने पड़े, लेकिन अपशब्दों का प्रयोग हुआ है। क्या गाली-गलौच संसदीय कार्यवाही एक अंग बनेगी? हाथापाई की भी नौबत आ गई थी। संसार के सबसे बड़े लोकतंत्र के लिए इससे बढ़कर चिन्ता की बात और कोई नहीं है। फिर भी मैंने सोनिया जी को पत्र लिखा और इस बात का प्रयास किया कि कोई रास्ता निकाला जाए। मुझे खुशी है कि आपके हस्तक्षेप से रास्ता निकला, लेकिन हर बार आपको बीच में डालने की जरूरत नहीं पड़नी चाहिए। पक्ष और प्रतिपक्ष आपस में बैठ कर तय कर लें।

लेकिन यह तभी संभव है जब ईमानदारी पर शक न किया जाए। हमने जब जेपीसी बनाने की बात कही थी वह उस समय स्वीकार नहीं हुई। हमने कमीशन नियुक्त कर दिया। कमीशन और जेपीसी साथ नहीं चल सकते। सब बातों पर विचार करना पड़ता है और अगर चर्चा के बाद बहुमत के द्वारा या सर्वानुमति के द्वारा इस परिणाम पर पहुंचता कि कमेटी का निर्णय होना चाहिए तो उसके लिए भी हमने कहा था कि हमारा खुला दिमाग है, मगर खुले दिमाग का मतलब खाली दिमाग नहीं है। हमारे भी मापदंड हैं और हम उन मापदंडों का पालन कर रहे हैं। हम आशा करते हैं कि सब समान मापदंडों का पालन करें।

मुझे सदन में गालियां दी गईं, किसी ने एक शब्द तक नहीं कहा कि यह असंसदीय है, इस तरह के शब्दों का प्रयोग नहीं होना चाहिए। लेकिन मैं उस प्रकरण को भूलने के लिए तैयार हूं। मैं चाहता हूं कि जब हम संसद में मिलें तो कार्यवाही ठीक से चले। अगर हम अल्पमत में हैं तो आप हमें हटा दीजिए। हमारी सरकार एक वोट से गिरी थी, हम एक वोट से हार गए और जब हार गए तो चले गए। हमने विवाद खड़ा नहीं किया लेकिन नैतिकता की दुहाई देकर यह कहा जाए कि आपको त्यागपत्र देना चाहिए तो ऐसे बहुत से मामले आए हैं और आ रहे हैं, जिनमें नैतिकता एकपक्षीय नहीं होगी, द्विपक्षीय नैतिकता का प्रयोग करना पड़ेगा। लेकिन जो कुछ हुआ है वह सचमुच में पीड़ादायक है। मैं संसद में इसलिए नहीं आया था। मैंने 40 साल तक इसके लिए प्रतीक्षा की थी। भगवान राम ने रामायण में कहा था कि मैं मरने से नहीं डरता, मगर बदनामी से डरता हूं:

''न भीतो मरणादस्मि केवलम दूषितो यश''

मगर यहां किसी के सम्मान की रक्षा हो सकती है, ऐसा नहीं लगता मैं ऐसा नहीं कहता कि इसमें एकतरफा कार्यवाही हुई है, इसके लिए दोनों दोषी हैं। हम भी दोषी हैं, जहां हमारा दोष है, हम स्वीकार करने के लिए तैयार हैं, लेकिन उसके लिए वातावरण कैसा होना चाहिए। अगर नीतियां इसलिए बनाई जाएं, प्रस्ताव इसलिए लाए जाएं, चर्चा इसलिए उठाई जाए कि किसी की इमेज खराब करनी है, हम एक-दूसरे की इमेज का खंडन करने में लगे हुए हैं और इधर देश की इमेज खराब हो रही है। हम संसार में सबसे बड़ा लोकतंत्र होने का दावा करते हैं, मगर क्या हो रहा है। दुनिया हमें किस तरह से देख रही है।

अध्यक्ष महोदय, मैं आपका आभारी हूं कि आपने मध्यस्थता की। वैसे हम द्विपक्षीय वार्ता द्वारा हल निकालने के पक्ष में हैं लेकिन कभी-कभी तृतीय पक्ष की आवश्यकता होती है और आप पक्ष और विपक्ष के बीच में निष्पक्ष हैं। आपने प्रयास किया कि रास्ता निकले और रास्ता निकला है। मैं समझता हूं कि अगले सत्र में जब हम मिलें और पक्ष और प्रतिपक्ष के बीच में अगर आपकी आवश्यकता हो तो आपके द्वारा ऐसा प्रयास होना चाहिए कि भविष्य में इस तरह की पुनरावृत्ति न हो। हम संसद की गरिमा को बनाए रख सकें और लोकतंत्र की रक्षा कर सकें।

अपराह्न 12.40 बजे

राष्ट्र गीत

(राष्ट्रगीत की धुन बजाई गई)

अध्यक्ष महोदय: अब सभा अनिश्चित काल के लिए स्थगित होती है।

अपराह्न 12.41 बजे

तत्पश्चात् लोक सभा अनिश्चितकाल के लिए स्थगित हुई।